प्रश्नोत्तर

गुलमर्ग (जम्मू-कश्मीर) १७-७-'५९

जर्मनी और भारत का संबंध

प्रश्न : जर्मनी में हिंदुस्तान के लिए बहुत आकर्षण क्यों है ?

विनोबाजी : इसका कारण यह है कि डेढ़ सौ साल पहले अंग्रेजी के जरिये जर्मन भाषा में उपनिषदों का तर्जुमा हुआ था। वहाँके विचारकों पर और खास कर सोपेन हावर पर उसका बहुत असर हुआ, जो दुनिया का सर्वश्रेष्ठ दार्शनिक था। उपनिषद् पढ़कर वह नाचने लगा। उसने कहा कि यह चीज मुझे मरने तक काम देगी। उसने उपनिषद् पर काफी लिखा। फिर गेटे ने कालिदास का 'शाकुन्तल' पढ़ा और वह उसपर आशिक हो गया। तब से जर्मन लोगों में एक जिज्ञासा पैदा हुई कि संस्कृत से हमें खूब मिलेगा। खास कर जब उन लोगों ने गीता पढ़ी तो उसका उनपर बहुत असर हुआ। गीता में युद्ध के साथ दर्शन जोड़ दिया गया है। उस समय जर्मनी में एक आवेश था। इसलिए उन्हें लगा कि यह चीज हमें आध्यात्मिक खुराक देगी। गीता में एकान्त में जाने की बात नहीं, बल्कि पराक्रम के साथ दर्शन की बात है। तब से जर्मनी में उपनिषद्, गीता और शाकुन्तल का बहुत अध्ययन हुआ। फिर वेद का भी अध्ययन हुआ। वेद का उत्तम कोष एक जर्मन ने बनाया। जब कि हिंदुस्तान में वेद छपा नहीं था, मैक्समूलर ने ऋग्वेद का सायण भाष्य के साथ अच्छा एडीशन निकाला। उसकी चालीस साल की उम्र ऋग्वेद के अध्ययन में बीती। वह ब्रह्मचारी था। उसके मरने पर लोकमान्य तिलक ने 'केसरी' में एक लेख लिखा था। जब मैंने उसे पढ़ा, तब खयाल आया कि उसका जीवन कैसा था। लोकमान्य ने लिखा था : "वह ब्रह्मचारी था, इसलिए ऋग्वेद का अध्ययन कर सका। हममें ब्रह्मचर्य की कमी है, इसलिए हम वेद का अध्ययन नहीं कर पा रहे हैं। कम-से-कम चालीस साल के बाद तो ब्रह्मचर्य का पालन जरूर करना चाहिए। नहीं तो हमारा कोई दर्शन नहीं टिकेगा।"....तिलक महाराज ने जेल में एक किताब लिखी थी, जिसमें कहा था कि 'आर्यों का मूल निवास-स्थान उत्तर ध्रुव होगा।' वह किताब मेक्समूलर ने पढ़ी और फिर भारत-सरकार को लिखा कि 'आपने ऐसे महाविद्वान् को जेल में रखा है, उसे मुक्त करो तो अच्छा होगा।'..... उसीके परिणामस्वरूप तो नहीं कह सकते, फिर भी दो-चार महीने पहले ही लोकमान्य छूटे। इस तरह जर्मनी और हिंदुस्तान का संबंध है। हिंदुस्तान के बाहर संस्कृत का जितना अध्ययन होता है, उतना हिंदुस्तान की दूसरी किसी भाषा का नहीं होता। जर्मनी और हिंदुस्तान के संबंध के लिए और एक कारण था। हिंदुस्तान में अंग्रेजों के खिलाफ आन्दोलन चल रहा था और जर्मनी भी अंग्रेजों के खिलाफ था। फिर जर्मनों ने अपने को 'आर्य' कहकर 'क्रॉस' के बदले 'स्वस्तिक' का चिन्ह लिया। इस तरह हिंदुस्तान के साथ उनकी अन्दर से बहुत ज्यादा दिलचस्पी रही है।

लोग कहते हैं कि सर्वोदय-पात्र का कार्यक्रम उत्साहवर्धक नहीं है। लेकिन मैं कहता हूँ कि वह बुद्धिवर्धक है। आचार्य चाणक्य कहते हैं कि मेरा सब कुछ जाय, लेकिन बुद्धि न जाय : 'बुद्धिस्तु मा गान् मम।' हम सिर्फ एक ही दफा लोगों के पास जायँ और यह अपेक्षा करें कि लोग सतत सर्वोदय-पात्र में अनाज डालते रहें तो इसे वे क्यों मानेंगे ? मैं मानता हूँ कि सर्वोदय-पात्र का कार्यक्रम एक सौम्य सत्याग्रह का नमूना है। वह हमें पक्की बुनियाद पर स्थिर करना चाहिए।

विवेकानन्द की गर्जना

अमेरिका में भी उपनिषदों ने ऐसा ही पराक्रम किया। 'इमरसन' और 'थोरो' जैसे दार्शनिक और 'विट्मन' और 'टाइम' जैसे कवियों पर उपनिषद का बहुत प्रभाव पड़ा। उन्होंने विवेकानन्द की भूमिका तैयार की थी। विवेकानन्द ने एक व्याख्यान से अमेरिका को जीता। उन्होंने निडरता से कहा कि 'हिंदू-धर्म किसी व्यक्तित्व के साथ जुड़ा नहीं है। उस धर्म में किसी प्रकार का डागमा नहीं है। मुक्ति का कोई धर्म है तो वेदांत ही है। इस्लाम पैगम्बर के साथ और ईसाई धर्म ईसा के व्यक्तित्व के साथ जुड़ा हुआ है। लेकिन हिन्दू-धर्म राम या कृष्ण जैसे किसीके भी व्यक्तित्व के साथ जुड़ा हुआ नहीं है। बल्कि रामचन्द्र ने कहा कि मैं उस धर्म का पालन कर रहा हूँ, जो मनु महाराज ने कहा था। कृष्ण ने भी उपनिषदों का सार ही गीता में कहा है। ● ● ●

अनुक्रम

१. पक्षपाती तटस्थता : साहित्यिक का धर्म
अमृतसर १२ नवम्बर '५९ पृष्ठ ७८३
२. जर्मनी और भारत का संबंध
गुलमर्ग १७ जुलाई '५९ „ ७८६

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in